भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 08.02.2019

बेंको के कार्यशाला की देन है बनारस का मशहूर काला पंखा

आईआईटी बीएचयू 100 साल-बेमिसाल

वाराणसी | आनंद मिश्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में स्थापित बनारस इंजीनियरिंग कालेज (बेंको) उद्यमिता संवर्धन का सेंटर था। उस समय बेंको के इंडस्ट्रीयल केमेस्ट्री लैब में कई प्रकार के आविष्कार हुए। बनारस का पहला डीसी फैन भी इन्हीं में से है। आगे चलकर यह बनारस के चर्चित काला पंखा के रूप में विख्यात हुआ। महामना जी के प्रेरणा से इंडस्ट्रीयल लैब में विश्वविद्यालय में उपयोग किए जाने वाले सामान भी बने जिसमें प्रयोगशाला में उपयोग की जानेवाली रबर ट्यूब, काला स्विच व प्लग तथा मिट्टी के तेल से गैस का निर्माण शामिल था।

उपलब्धि

- कार्यशाला में बना चार ब्लेड वाला अभी कई विभागों में चल रहा
- एक छात्र ने शिकाकाई नाम से तैयार किया था सिर में लगाने वला तेल

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थापित बनारस इंजीनियरिंग कालेज (बेंको) में स्थापित सिरेमिक विमनी।

बेंको के छात्र और आईटी बीएचयू के पूर्व निदेशक रहे प्रो. सिद्धनाथ उपाध्याय ने बताया कि बेंको के इस इंडस्ट्रीयल लैब में प्रयोगशाला में उपयोग किए जानेवाले सभी प्रकार के केमिकल तैयार होते थे। सिल्वर नाइट्रेट भी लैब में बनाई जाती थी। डिस्टिल वाटर और अन्य प्रकार के उपयोगी वस्तुओं का भी उत्पादन किया जाता था। बेंको के पूर्व छात्र रहे राजकुमार शाह ने बनारस के चर्चित काला पंखा की फैक्ट्री स्थापित कर बनारस के उद्योग को बढ़ाया। कोलकाता के एक अन्य छात्र ने शिकाकाई नाम से सिर में लगाने वाले तेल का आविष्कार किया था।

कास्ट आयरन से ढलाई : बेंको में कास्ट आयरन से ढलाई भी की जाती थी। विश्वविद्यालय के निर्माण में उपयोग आने वाले अधिक से अधिक सामानों को बीएचयू में बनाने की व्यवस्था थी। बीएचयू के भवनों में लगने वाले ईंटों के लिए कैंपस में ईंट भट्ठा भी स्थापित किया गया। क्लास रूम के लिए बेंच और टेबुल में लगने वाला लोहा तथा सीवेज का ढक्कन, सेनेटरी व ड्रेनज सिस्टम भी सिरेमिक विभाग की मदद से बनाए जाते थे।

चार ब्लेड वाला सीलिंग फैन: विश्वविद्याललय में बिजली उत्पादन के बाद पंखे का भी निर्माण किया गया। चार ब्लेड वाले सीलिंग फैन भी बेंको में ही बने और पूरे विवि में लगाए गए। सौ साल की अकादमिक यात्रा पूरी कर चुके बीएचयू में कई विभागों में आज भी यह पंखा चल रहा।

छात्रों ने लगाई इंडस्ट्री

बेंको से पढ़कर गए छात्रों ने अपने-अपने शहरों में कई इंडस्ट्रीयां भी लगाई। बीएचयू का बेंको न सिर्फ उद्यमिता संवर्धन का प्रेरणा स्रोत बना बल्कि बेरोजगारी को को दूर करने तथा शहर को आत्मनिर्भर बनाने में भी बड़ा योगदान दिया।

> मालवीय जी की दूर दर्षिता का ही परिणाम है कि आज संस्थान में इनोवेशन सेंटर व उद्यमिता संवर्धन के लिए प्रयास सेंटर स्थापित हुए। महामना उद्यमिता सेंटर छात्रों के आविष्कारों को प्रमोट करता है।
>
> -प्रो. पीके मिश्रा
>
> हेड केमिकल इंजीनियरिंग विभाग व उद्यमिता संवर्धन केंद्र के समन्वयक, आईआईटी बीएचयू